SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

ekè;fed Lrj d: fo|kfFk;k dh 'k{kf.kd leL;kvk dk vè;;u ¼ikfjokfjd ,o lkekftd lUnHk e½

eèk —".kkuh] (Ph.D.), प्राचार्य,
ओमकार कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, पत्रकार कालोनी, गुना, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
eèk —".kkuh] (Ph.D.), प्राचार्य,
ओमकार कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज,
पत्रकार कालोनी, गुना, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 21/12/2022
Revised on : -----
Accepted on : 28/12/2022
Plagiarism : 00% on 21/12/2022

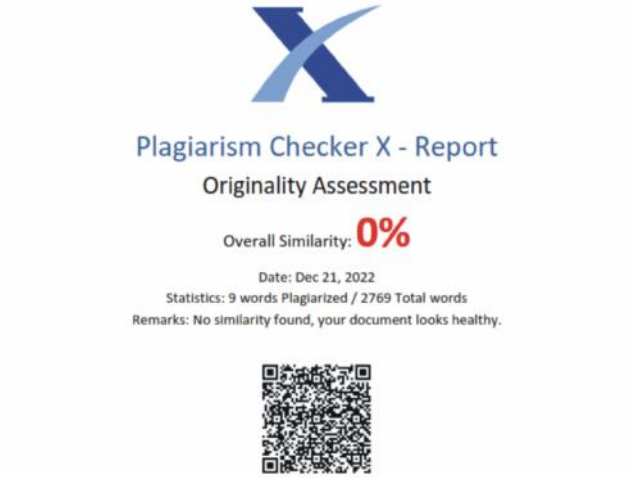

'kks/k lkj

शिक्षा समाज की प्रगति का प्रदर्शक होता है। शिक्षा ही है, जिसने लोकतांत्रिक प्रक्रिया को विश्व में सभी जगह फैलाया है जिसमें गांव से लेकर के महादेश तक शामिल है। समाज के उत्थान या पतन उस समाज में दी जाने वाली शिक्षा से निर्धारित होती है। अच्छी शिक्षा की पहुंच सभी लोगों तक एक समान नहीं हो पाई है और सभी को शिक्षा भी एक समान नहीं मिल पाती है इसीलिए सभी मनुष्य जो समाज में अपनी–अपनी सेवा भिन्न–भिन्न पैसा के माध्यम से दे रहे हैं, उन सभी के बच्चों को भी उनके घर के आसपास अच्छी शिक्षा मिलनी चाहिए। ऐसे बच्चों जिनको अच्छी शिक्षा अभी तक नहीं मिल पा रही है वैसे बच्चों को हम वंचित लोगों की श्रेणी में रखते हैं। वंचित लोगों को पहचान कर उनके लिए प्रयास करने चाहिए कि उन्हें भी ऐसी अच्छी शिक्षा का लाभ मिले क्योंकि समाज सभी को शिक्षा का अधिकार देता है और अच्छी शिक्षा का अधिकार देता है। शिक्षा का प्रचार और प्रसार की हम बात करें तो इस विषय में भारत जैसे विशाल देश में व्यापक भिन्नता एवं असमानता पाई जाती है। गांव में प्रमुख रूप से क्षेत्रीय भिन्नता भी शामिल है। भारत में अलग–अलग राज्य है जिसकी अलग–अलग समस्याएं हैं, चाहे वह भौगोलिक हो, धार्मिक हो या कोई अन्य मान्यताएं भी हो सकती है और इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए अखंड भारत के लिए प्रयास भी करनी है।

e[; 'kCn

f'k{kk] 'k{kf.kd] lekt] fo|kFkh] ifjokj·

çLrkouk

गांधीजी के अनुसार ''साक्षरता का अर्थ कभी भी शिक्षा का अंत नहीं होना चाहिए और न ही शुरुवात यह केवल एक साधन है जिससे स्त्री और पुरुष को शिक्षित

किया जा सकता है।''

इस वाक्य में गांधीजी ने अपने जीवन अनुभव के अनुरूप शिक्षा को परिभाषित किया है, और सिर्फ साक्षरता पर जोर ना देकर शरीर और मन को स्वस्थ रखकर उचित मार्ग की सोच रखते हुए अपने समाज को आगे बढ़ाने के लिए अच्छी शिक्षा, समाज के व्यव्हार को प्रदर्शित करती है। किसी भी समाज के उत्थान या पतन उसके शिक्षा की प्रक्रिया पर निर्भर होती है। शिक्षा से समाज फलता–फूलता है परन्तु, बड़े दुःख की बात है की इसकी (शिक्षा) वितरण सभी जगह,सभी के लिए समान रूप से वितरित नहीं है, कारणवश एक ही गांव, क़स्बा, शहर, राज्य, देश में इसकी असमानता साफ़–साफ़ रूप से देखने को मिलती है।

जब शिक्षा की बात करते हैं तो स्वाभाविक है वहां बाधक तत्त्व भी होंगे उन्ही बाधक तत्वों को हमारे द्वारा शैक्षिक समस्याएं के रूप में देखा गया है। संपूर्ण गांव में साक्षरता की दर दिन–ब–दिन बढ़ तो रही है परंतु अभी भी कुछ जगह ऐसे हैं जहां पर संपूर्ण साक्षरता तो दूर की बात है परंतु उसके आधा प्रतिशत लोग ही साक्षर हो पाए हैं और वहां आज भी बहुसंख्यक वर्ग साक्षरता से बढ़कर शिक्षित की ओर नहीं सोच पा रहे हैं। जिसमें चाहे परिवार के स्तर से कोई बधा उत्पन्न हो रही हो या समाज के स्तर से उन्ही सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याओं जिसमें घर से विद्यालय की दूरी का ज्यादा होना, घर की भौगोलिक अवस्थिति का एकांत में होना, उम्र के हिसाब से मानसिक एवं व्यवसायिक गाइड का न मिल पाना, पालकों का स्वास्थ्य का अच्छा न होना, विद्यालयों में शिक्षक की कमी जैसे प्रमुख कारण शामिल है। इस प्रकार की समस्या देश के ज्यादातर राज्यों में है परन्तु माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत् विद्यार्थी अत्यंत संवेदनशील होते हैं, अतः उन्हें भिन्न–भिन्न प्रकार की शैक्षिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है और उन समस्याओं में अपने किशोरावस्था के समस्याओं से लेकर वातावरण की बहुत सारी गतिविधियां शामिल होती है। इन्ही समस्याओं को हम अपने अध्ययन के माध्यम से जानने का प्रयास किये हैं। शिक्षा के माध्यम से घर, परिवार, समुदाय के साथ समाज का भी उत्थान होता है और इसको प्राप्त करने की एक प्रक्रिया जिसे औपचारिक शिक्षा कहते है।

vkipkfjd f'k{kk

ऐसी शिक्षा व्यवस्था जिसमें किसी खास जगह या फिर किसी नामित स्थल पर ही शिक्षा प्रदान की जाती है और उनमें विद्यालय या कोई संस्थान का अपने अनुभव,ज्ञान जैसे चीजों से विद्यार्थियों को लाभ दिलाते हैं ठीक इसी प्रकार शिक्षा के भिन्न प्रकारों में शामिल होकर ही ग्रहण किया जा सकता है, जिससे की इस प्रक्रिया के माध्यम से प्रणाली बना कर सभी अपना विकास कर सके, तब एक शिक्षक के रूप में हमें यह सोचना चाहिए की हमारे माध्यम से क्या कोई शिक्षा का लाभ ले सकता है? यदि इसका उत्तर हाँ है तब हमें प्रयास करनी चाहिए! कम से कम एक लोगों को हम लाभान्वित अपने खुद के प्रयास से कर पाएं।

ifjokj

डी. एन. मजूमदार के अनुसार ''परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो एक छत के नीचे रहते हैं, रक्त से संबंधित होते हैं और स्थान,स्वार्थ एवं आदान–प्रदान के आधार पर एक किस्म की चेतना का अनुभव करते हैं।''

जोंस के अनुसार ''परिवार यौन संबंधों पर आधारित एक ऐसे सामाजिक संस्था है जिस पर संतानोत्पत्ति एवं उनका पालन–पोषण किया जाता है।''

क्लेयर के अनुसार ''परिवार को हम संबंधों की व्यवस्था समझते हैं, माता–पिता और उनकी संतानों के मध्य पाई जाती है।''

विद्यार्थियों के अधिगम को प्रभावित करने वाली प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कारक जिनसे विद्यार्थियों के शिक्षण प्रभावित होते है। जैसे–जैसे मानव अपने नित दिन के कार्यों को करने की सोचता है उसे सम्बंधित कार्यों में समस्यायों का सामना कारण पड़ता है और उन समस्याओं को विभिन्न रूपों में देखता है ठीक उसी प्रकार शिक्षा भी प्रक्रिया में शामिल हैं। विद्यार्थियों की शिक्षा के अर्जन करने में जितनी भी परेशानियों का सामना करना पड़ता

है वे सभी समस्याऐ शैक्षिक समस्याएं कहलाती हैं। शैक्षिक समस्याएं अलग–अलग तरह की हो सकती हैं जिसके कारण से विभिन्न शैक्षिक क्रियाकलाप बाधित होती हैं। शैक्षिक समस्याएं को पहचान कर उनकी निवारण करने की कोशिश करना ही शिक्षित लोगो के द्वारा क्रियान्वित की जाती रहती है और दिन प्रति दिन नए–नए शोधो का प्रचलन बढ़ता ही जायेगा क्योंकि समस्या क्यों न एक के लिए हो, वो भी समाज का हीं अंग होता है इसीलिए समाज भी प्रभावित होता है। शैक्षिक समस्याएं, भौगोलिक अवस्थाएं, पारिवारिक, सामाजिक, विद्यार्थियों के तनाव, उनकी शारीरिक–मानसिक जैसे कारको पर भी निर्भर रहती हैं।

परिवार स्तम्भ होता है, परिवार शब्द अपने आप में एक पूर्णता की पहचान कराता है जिससे हम स्वयं में एक दूसरे से प्रेम, त्याग एवं त्याग के साथ समर्पण का भाव से बांध देता है, वहीं पर जब हम माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत् होते है तब तक लगभग बालक बालिकाओं में मस्तिष्क का विकास होता है। कभी–कभी किशोरावस्था में ही घर की पालन–पोषण की जिम्मेदारी आ जाती हैं। इनसे उनको मजबूती तो मिलती ही है परंतु उनका शैक्षिक विकास बाधित होता है। किशोरावस्था जहाँ से विद्यार्थी अपनी जीवन नई मौलिक चीज़ों की समझ को व्यवहार में शामिल करते हैं, जिससे समाज में स्वीकार किया जा सके, पर काश की सबको शिक्षा का महत्व को समझने की जरुरत है और सभी बाधक तत्वों को दूर करने की कोशिश करनी पड़ेगी। उन सभी परिवार के बच्चों को जो उनके अपने अभिभावकों द्वारा प्रदर्शित संस्कार को ग्रहण करते हैं, परन्तु परिवार भी तो समाज का ही एक इकाई है। जैसे–जैसे बालक अपने उम्र के परिपक्वता की ओर बढ़ता है वातावरण से प्रभावित होता है, यही से उसके संगती के अनुसार वह अपनी जीवनचर्या को बदलता है। जब उसकी मित्रता विद्यालय में बनती है तब से ही उसकी परिवर्तन को परिवार, वातावरण दोनों ही प्रभावित करती है परन्तु जब वह अपने अधिगम को पूरा करने की कोशिश करता है, तब उसके सामने विभिन्न शैक्षिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। एक ओर सरकार लड़कियों की शादी की उम्र 21 करने वाली है परन्तु कुछ बच्चियां 16 –17 वर्ष में ही ब्याह दी जाती है जिससे उनके अध्ययन पूरी तरह प्रभावित होती हैं। इसकी मूल वजह समाज में फैले अंधविश्वास को दूर करके, साथ ही अपनी बेटी के टैलेंट पर भरोसा करने की जरूरत है। समाज के महत्वपूर्ण इकाईओ में से एक है, परिवार जिसपर विद्यार्थिओं की अधिगम का असर धनात्मक एवं नकारातमक दोनों रूप में पड़ता है। अगर परिवार के अभिभावक शिक्षित हैं तो बच्चा को भी शिक्षा के प्रतिफल को समझते हुए उससे एक अच्छा सीखने वाला माहौल मिलेगा, जिससे शैक्षिक उपलब्धि के बिंदु में सम्बंधित विद्यार्थी की अधिगम क्षमता कम प्रभावित होगी।

lekt

अरस्तू के अनुसार ''मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज से बाहर रहने वाला या तो देवता है या पशु।

समाज भिन्न–भन्न समुदाय का मिश्रण होता है, जहां अलग–अलग विचारों के लोग निवास करते हैं और उनकी अपने सोच समाज में चलित शिक्षा की प्रक्रिया में अपना इन्हीं विचारों से अपना प्रभाव दिखाती है। शैक्षिक समस्या बहुत से कारको पर निर्भर करती है। व्यक्तियों के संगठन और मानव समूह से समाज की वर्तमान स्थिति का पता लगाया जा सकता है जैसे महिला समाज, शिक्षक समाज, ब्राह्मण समाज इत्यादि। समाजशास्त्र के अंर्तगत 'समाज' में किया जाता है।

lekt dk lekt'kkL=h; vFk

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से व्यक्तियों में पाये जाने वाले पारस्परिक सबंधो की व्यवस्था अथवा सामाजिक संबंधो का जाल को समाज कहा जाता है। इसका अभिप्राय यह है की समाज का निर्माण व्यक्तियों से नही, वरन उनमें पाए जाने वाले सामाजिक संबंधो से होता है। दूसरे शब्दो में हम कह सकते हैं की ''समाजशास्त्रीय अर्थ में समाज व्यक्तियों का समूह नही होता बल्कि व्यक्तियों के मध्य पाये जाने वाले पारस्परिक संबंधों की व्यवस्था को हम समाज कहते हैं।''

vè;;u dh vko';drk

माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थी अलग–अलग समस्यायों से घिरे हैं, जिसमें माता पिता में से किन्ही एक या दोनों का नशीले पदार्थों का सेवन, बाल मजदूरी, अशिक्षा, ज्यादा भाई–बहनो का होना तथा मानव व्यापार। सिर्फ इतना ही नहीं माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले ज्यादातर विद्यार्थी जिनमें बालक एवं बालिका दोनों की कुछ सामान्य तो कुछ भिन्न समस्याएं है जिनमें मुख्यरूप से बालव्यापार या फिर मानवतस्करी का शिकार होना, बालमजदूरी करना, विद्यालयी शिक्षा के महत्वों को न समझ पाना, परिवार में शिक्षित जनो का न होना जैसी आम समस्या देखने को मिलतीं है, परन्तु समस्या सिर्फ इतना ही न होकर अन्य संवेदनशील मुद्दे हैं। जब शोद्यार्थी अपने माध्यमिक कक्षा में अध्ययन कर रहा था तब शोद्यार्थी के साथ अध्ययनरत् बहुत सारे विद्यार्थी अध्ययन पूरी नहीं कर पाएं थे,उस समय तो शोद्यार्थी को समझ नहीं आया कि क्यों वे विद्यालय क्यों नहीं आ रहें थे, परन्तु जब शोद्यार्थी ने अपने सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण में विद्यार्थिओं के बारे में एवं उनके शैक्षिक समस्याओं के बारे में पढ़ा तब शोद्यार्थी लगा, कि जिले की समस्याओं को जानना चाहिए साथ ही उनके निवाकरण पर ध्यान देना चाहिये। शिक्षा कि जो योजनाएं राज्य सरकार एवं केंद्र सरकार के सरकारी तंत्र से निकलकर गांव या फिर शहर के विद्यार्थियों के लिए चल रही है फिर भी पूर्ण साक्षरता के लक्ष्य को अभी हासिल करने में लगभग एक चौथाई प्रतिशत को प्राप्त करने की की आवश्यकता है। मतलब अभी भी लगभग 25 प्रतिशत जनसंख्या साक्षर नहीं है, शिक्षित की तो बात नहीं कर सकते। लेकिन अभी भी इतने प्रतिशत लोग साक्षर नहीं है और खास करके बालक बालिकाओं की शैक्षिक क्रिया में बाधा उत्पन्न माध्यमिक स्तर पर कौन–कौन से कार्य कर रही हैं जिनमें सामाजिक एवं पारिवारिक रूप से इन समस्याओं को देखकर और उन समस्याओं से संबंधित समस्याओं के निवारण को प्राप्त कर, पूर्ण साक्षरता की ओर राज्य एवं देश का लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर हो सके। खूंटी जिले की शैक्षिक स्थिति एक पिछड़े क्षेत्र में पहचानी जाती है क्योंकि इसके अपने भिन्न कारण है जिसमें मुख्य रुप है उसमें आधी से ज्यादा जनजाति आबादियों का होना और भौगोलिक स्थिति एवं उसके भी अनेक अनेक चरण है। उन्हीं समस्याओं को दूर करने के लिए उन्हें शिक्षित करने की अति आवश्यकता है क्योंकि उस क्षेत्र में लोअर बॉर्डर की आए दिन समस्या होते रहती है जिसका मुख्य कारण वहां के भोले–भाले आदिवासियों को कुछ पैसों की लालच देकर के और लोकतांत्रिक एवं असंवैधानिक कार्यों में सनलिप्त कराया जाता है जिससे माध्यमिक स्तर पर ही उन्हें पैसों की लालच लग जाती है और वह अपने स्वयं को पैसे कमाने की प्रक्रिया में जोड़ लेते हैं, ऐसे ही बहुत सारे कारक हो सकते हैं। मानव जीवन की विकास की आधारशिला शिक्षा को ही माना गया है, चाहे वो औपचारिक शिक्षा हो या अनौपचारिक शिक्षा और शिक्षा को ग्रहण करने का तरीका भले ही समय–समय पर बदलता रहेगा क्यूंकि परिवर्तन ही समय की मांग होती है।

vè;;u dk mís';

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का सामाजिक संदर्भ में शैक्षणिक समस्याओं का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का पारिवारिक संदर्भ में शैक्षणिक समस्याओं का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में बालक वर्ग के सामाजिक एवम् पारिवारिक संदर्भ में शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में बालिका वर्ग का सामाजिक एवम् पारिवारिक संदर्भ में शैक्षणिक समस्याओं का अध्ययन करना।

lfØ;kRed ifjHkk"kk

'kS{kf.kd leL;k,¡ शिक्षा को अधिग्रहित करने की प्रक्रिया में जितनी भी समस्याएं हमें देखने को मिलती हैं वे सभी समस्यें शैक्षणिक समस्याएं कहलाती है,जिनमें कुछ हैं पारिवारिक, सामाजिक, तनाव, भौगोलिक अवस्थिति, असुरक्षा का भाव एवं बुनियादी ढांचा में कमी का होना शामिल है।

ikfjokfjd lUnHkZ शैक्षणिक समस्या के पारिवारिक सन्दर्भ से शोधकर्ता का अर्थ यह है की परिवार से जुड़ी

वो चीज़े जो विद्यार्थियों के शिक्षा अधिग्रहण करने की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करती है जो परिवार से जुड़ी होती हैं, जिसके अंतर्गत बालक या बालिकाओ को समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

lkekftd lUnHkZ शैक्षिक समस्या के सामाजिक सन्दर्भ से शोधकर्ता का मानना यह है की वैसी सभी समस्या जो परिवार से बड़ी अर्थात् समाज से जुड़ी हैं जो सीधे या अन्य तरह से विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रक्रिया को प्रभावित करती है। समाज एक व्यापक शब्द हैं जिसके अंतर्गत विभिन सामजिक ईकाईयो के कारक रूप में कार्य करता है।

fu"d"kZ

यह अध्ययन माध्यमिक विद्यार्थियों के शैक्षणिक समस्या समाज और परिवार के संदर्भ में है। इससे यह पता चलता है कि किस प्रकार समाज और परिवार से संबन्धित समस्या से घिरे हुए हैं। इस क्रम में शोधार्थी ने कई आयामों पर केन्द्रित समस्या को बताने की कोशिश की है, अनुभाविक तथ्यों को संकलित किया जा सके। यह अध्ययन सामाजिक, पारिवारिक समस्या के साथ–साथ स्कूल की शिक्षको का बच्चो से सम्बन्ध एवं अन्य संरचनात्मक कारको पर गौर कराता है।

अध्ययन के निष्कर्ष मुख्यतः निम्न प्रकार है–विद्यार्थियों को डांट पड़ने पर घर छोड़ने का मन करता है, पेटभर भोजन न मिलने की समस्या है, परिवार के सदस्यों द्वारा नशीले पदाथों का सेवन करते हैं, हमेशा अभिभावकों में पढाई के वजह से क्लेश होती रहती है जिससे मुझे निराशा महसूस होती है, घर में मुझसे बड़े परिवार के सदस्यों से पढ़ाई में मदद नहीं मिलने के कारण उनमें आत्मविश्वास में कमी होती, विद्यार्थियों के पास हमेशा अपनी पेन–कॉपी एवं अन्य पढाई से सम्बंधित चीजों का अभाव रहता है,विद्यार्थी घरवालों से अपनी समस्याओं नही बताते हैं। विद्यार्थी घर के व्यवसायिक गतिविधियों में शामिल होने के कारण उनके पढ़ाई के समय में बहुत फर्क पड़ता है, अध्ययन के समय घर पर पाठ्यपुस्तक से सम्बंद्ध सहायता नहीं मिलना, पढ़ाई पर ध्यान नहीं लगता है, हीनभावना होने लगती है, तनाव होता, अध्ययन में पिछड़ने का डर लगा रहता है, शैक्षिक सहायता नहीं मिल पाती है, कुछ प्रश्न पूछने में डर/भय महसूस होती है,जिससे विद्यार्थी को घर के काम/ धनार्जन करनी पड़ती है। अकेलापन, शिक्षक द्वारा पढ़ाया गया पाठ्यवस्तु उन्हें समझ में नहीं आती है कक्षा में पढ़ाई पर केंद्रित नहीं कर पातें है, सोशल साइट्स पर मनोरंजन करते हुए उनकी ध्यान विकेंद्रित होती है। उन्होने यह भी माना कि विद्यालय में और न ही घर पर कोई शैक्षिक मार्गदर्शन देना वाला है। अतः इस प्रकार यह पाया गया कि ज्यादातर विद्यार्थियों के शैक्षणिक समस्याओं से सम्बंधित प्रश्नो के प्राप्त मत के अनुसार यह पाया गया कि विद्यार्थियों के मनोभाव में तनाव, शैक्षणिक मार्गदर्शन में कमी, अभिभावक का निरक्षर होना, विद्यालय तक पहुँच सड़क का न होना, असुरक्षित महसूस करना, विद्यालय में पुस्तकालय, विज्ञान के शिक्षक की कमी, प्रयोगशाला का न होना, सड़क किनारे विद्यालय का होना, अपने सहपाठी से पिछड़ने का डर, गृह कार्य में सहायता न मिलना, घर में अभिभावक द्वारा विद्यार्थी के बातों को न सुनना, संकोच और तनाव जैसी सामाजिक समस्याओं पर केंद्रित पायी गयी।

lUnHkZ lwph

1. सिंह अरुण कुमार, *मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में अनुसंधान विधियाँ* (बारहवाँ परिवर्धित संस्करण, 2015) नई दिल्ली मोती लाल बनारसी पब्लिकेशन पृ०संख्या 78–79,271,279।
2. पाठक पी०डी०ए (2003) *शिक्षा मनोविज्ञान* (सप्तम संस्करण) आगरा, पृ०संख्या 370–381।
3. अग्रवाल जे. सी., (1972). *भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ,* आर्य बुक डिपो 30 ,करोल बाग, नई दिल्ली।
4. पाठक पी. डी., (2005). *भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें,* आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
5. भटनागर एस., (2011), *भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास,* मेरठ, लाल बुक डिपो, 259।

6. मालवीय आर., (2012). *उद्दियमान भारतीय समाज में शिक्षक,* इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन, 6–9,1214,302–305।

7. माथुर एस., (2008). *शिक्षा के समाजशास्त्र आधार,* जयपुर, अपोलो प्रकाशन।

8. माथुर एस., (2013). *शिक्षा के दार्शनिक तथा सामजिक आधार,* आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।

9. लाल आर.बी., (2013). *भारतीय शिक्षा का विकास एवं उनकी समस्यायें,* मेरठ, आर. लाल बुक डिपो , 17–19, 35– 38,439–443।

****